कोविड ट्रीटमेंट फैसिलिटी (पेड)
राज्य सरकार के निर्देशानुसार
जनरल वार्ड । आईसीयू
ए.सी. वार्ड | प्राइवेट ए.सी. रूम
प्राइवेट नॉन ए.सी. फैमिली सुइट
प्राइवेट ए.सी. फैमिली सुइट
* सभी अतिरिक्त सुविधाएं अतिरिक्त भुगतान पर उपलब्ध
9649904849, 9461221718

टी मीडिया

tmedia@tantiauniversity.com

टांटिया समूह, श्रीगंगानगर का गौरवशाली प्रकाशन

बीकानेर सम्भाग में पहली बार
विश्व की अत्याधुनिक व बड़ी
M.R.I. (एम.आर.आई.)
1.5 Tesla (16 Channel)
मशीन द्वारा
जांच अब
श्रीगंगानगर में
टांटिया जनरल हॉस्पिटल
सुखाड़िया मार्ग, श्रीगंगानगर
0154-2481505, 94139-50724
आपातकालीन सुविधाएं 24 घंटे उपलब्ध

वर्ष : 01 | अंक : 12 | पाक्षिक | श्रीगंगानगर | 30 नवम्बर, 2020 | मोबाइल : 9461221718, 8005519250

टांटिया समूह सभी के सहयोग से ही बना चिकित्सा सेवा एवं उच्च शिक्षा का केन्द्र : डॉ. विशु टांटिया

सामाजिक सरोकारों में भी निभाई जा रही है सक्रिय सहभागिता

श्रीगंगानगर।

टांटिया समूह गुणवत्ता और विश्वसनीयता से भरपूर चिकित्सा सेवा एवं उच्च शिक्षा में मिसाल बनने के साथ ही सामाजिक सरोकारों में भी सक्रिय सहभागिता निभा रहा है। शासन-प्रशासन और समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रहे इस समूह के डॉ. विशु टांटिया बड़ी विनम्रता से बस यही कहते हैं कि सभी के सहयोग से सारे कार्य हो रहे हैं, अभी तो इलाके का नाम और बढ़ाना है और करने हैं बहुत सारे काम। श्रद्धेय पिताश्री डॉ. श्यामसुन्दर जी टांटिया दूरदर्शी थे, उनकी जीवन पर्यन्त यही कोशिश रही कि श्रीगंगानगर क्षेत्र की चिकित्सा सेवा-शिक्षा तथा उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विशिष्ट पहचान बने। ऐसा करने में वे सफल भी रहे।

डॉ. विशु टांटिया

टांटिया समूह की पूरी टीम का यही प्रयास सदा रहता है कि जमाने के साथ चलते हुए विश्वस्तरीय सेवाएं-सुविधाएं उपलब्ध करवाई जाए। श्रीगंगानगर के सुखाड़िया मार्ग स्थित टांटिया जनरल एंड मल्टीस्पैशिलिटी हॉस्पिटल, हनुमानगढ़ रोड पर टांटिया यूनिवर्सिटी एवं यूनिवर्सिटी परिसर के डॉ. एस.एस. टांटिया एमसीएच एंड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल) के माध्यम से लोगों की अपेक्षाएं पूरी की जा रही है। जो भी सम्पर्क में आता है, प्रभावित हुए बिना नहीं रहता।

सर्वाधिक विश्वसनीय केंद्र

टांटिया जनरल एण्ड मल्टीस्पैशिलिटी हॉस्पिटल अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधाओं का सर्वाधिक विश्वसनीय केंद्र है। विशेषज्ञ चिकित्सकों की टीम एवं अनुभवी प्रशिक्षित स्टाफ की सेवाएं उपलब्ध हैं। मानसिक रोग एवं नशा मुक्ति विभाग, न्यूरो सर्जरी एवं ट्रोमा विभाग, मेडिसिन विभाग, आईसीयू विभाग, प्रसूति एवं स्त्री रोग विभाग, आर्थोपेडिक विभाग, छाती, दमा एवं टीबी रोग विभाग, प्लास्टिक सर्जरी विभाग, जनरल सर्जरी विभाग, ईएनटी विभाग, आयुर्वेद विभाग, होम्योपैथी विभाग, दंत रोग विभाग, ऑरल एंड मैक्जिलोफेशियल विभाग, रेडियोलॉजी विभाग, फिजियोथैरेपी विभाग आदि के माध्यम से उल्लेखनीय सेवाएं दी जा रही है।

टांटिया यूनिवर्सिटी टॉप-10 में

टांटिया यूनिवर्सिटी शिक्षा जगत की अंतरराष्ट्रीय पत्रिका नोलेज रिव्यू के एक सर्वे में टॉप-10 में रही है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा एवं विश्वसनीयता का यह पर्याय है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) से मान्यत प्राप्त है वहीं ऑल इंडिया कौंसिल फॉर टेक्निकल एज्युकेशन (एआईसीटीई), नैशनल कौंसिल फॉर टेकनिकल एजुकेशन, बार कौंसिल ऑफ इंडिया, फार्मेसी कौंसिल ऑफ इंडिया, सेंट्रल कौंसिल ऑफ इंडियन मेडिसिन, सेंट्रल कौंसिल ऑफ होम्योपैथी, इंडियन नर्सिंग कौंसिल, एसोसिएशन ऑफ इंडियन यूनिवर्सिटी, आयुष मंत्रालय, दी इंडियन एसोसिएशन ऑफ फिजियोथैरेपी, सामाजिक न्याय विभाग, मानव संसाधन विभाग आदि से सम्बद्ध और स्वीकृत है।

जन-जन के मन में बनाया स्थान

डॉ. एस.एस. टांटिया एमसीएच एंड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल) ने जन-जन के मन में स्थान बनाया है। सिर्फ 10 रुपए में मरीज देख जाते हैं, भर्ती का शुल्क केवल 20 रुपए लिया जाता है। विशेषज्ञ चिकित्सक तथा अनुभवी समर्पित स्टाफ हर समय सेवा को तत्पर रहते हैं। सर्जरी के सफल सेंटर के रूप में इसकी विशेष ख्याति है। मेडिसिन विभाग, सीटीवीएस विभाग, न्यूरो सर्जरी, अस्थि एवं जोड़ रोग, मुंह, गला एवं थॉयराइड कैंसर रोग, नेत्र रोग, प्रसूति व स्त्री रोग, नवजात व शिशु रोग, छाती, टीबी व श्वास रोग, दंत रोग विभाग, आहार व पोषण विभाग कार्यरत हैं। कोरोना मरीजों के लिए भी अलग से सराहनीय सेवाएं दी जा रही है। हॉस्पिटल की अत्याधुनिक लैब सुविधाओं की ख्याति भी चहुं ओर है।

डॉ. महेश माहेश्वरी की बड़ी भूमिका

टांटिया समूह के श्रीयश में बढ़ोतरी में वरिष्ठ न्यूरो सर्जन डॉ. महेश माहेश्वरी की बड़ी भूमिका है। सालों पहले जब वे टांटिया जनरल एण्ड मल्टीस्पैशिलिटी हॉस्पिटल से जुड़े, उसके बाद नए आयाम स्थापित हुए हैं, बुलंदियों को छुआ है। उनकी विशेषज्ञता एवं कुशल मार्गदर्शन में न्यूरो सर्जरी एवं ट्रोमा विभाग की विश्वस्तरीय सुविधाओं के चलते विशिष्ट पहचान बनी है। अब जन सेवा हॉस्पिटल में भी न्यूरो सर्जन डॉ. धीरज गोदारा की नियमित सेवाएं शुरू की हैं। डॉ. माहेश्वरी के सदा यही प्रयास रहते हैं कि मरीजों एवं उनके परिजनों को महानगरों की तरफ नहीं दौड़ना पड़े तथा समय रहते उपचार मिलने से मृत्यु दर नगण्य रहे।

डॉ. महेश माहेश्वरी

सामाजिक सरोकारों की सर्वत्र सराहना

टांटिया समूह के सामाजिक सरोकारों की सर्वत्र सराहना होती है। कोरोना काल में दस दिवसीय विशेष जागरुकता अभियान चलाया गया, नुक्कड़ नाटक का मंचन भी किया गया। राजकीय जिला चिकित्सालय के आईसीयू का जीर्णोद्धार करवाया गया है। शहर के प्रमुख शिव सर्किल को गोद लिया हुआ है। कई जल मंदिर संचालित किए जा रहे हैं, हाल ही में सर्किट हाउस में जल मंदिर का लोकार्पण जिले के प्रभारी मंत्री डॉ. बी.डी. कल्ला ने किया। टांटिया किसान सेवा केंद्र के माध्यम से किसानों को लाभान्वित किया जा रहा है। थैलेसीमिया पीड़ित बच्चों की सेवा की जा रही है। जे.आर. टांटिया नशा चैरिटेबल नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र उल्लेखनीय कार्य कर रहा है।

...पूरी किताब तो अभी बाकी है

कई सपने, अपने करने बाकी हैं, कई ख्वाब पूरे करने बाकी हैं, अभी तो पूरा हुआ है एक पन्ना, पूरी किताब तो अभी बाकी है। टांटिया समूह पर ये पंक्तियां सटीक बैठती हैं। महाराजा गंगासिंह जी सपनों के शहर श्रीगंगानगर का मान बढ़ाने में इसका बहुत बड़ा योगदान है। डॉ. विशु टांटिया और पूरी टीम ने इसके लिए कठिन परिश्रम किया है और अथक मेहनत लगातार जारी रखे हुए हैं।

अब श्रीगंगानगर में भी 6 घंटे में मिलेगी कोरोना की जांच रिपोर्ट

डॉ. एस.एस. टांटिया मेडिकल कॉलेज, हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर की लैब को एनएबीएल से मिली मंजूरी

श्रीगंगानगर।

कोरोना की जांच रिपोर्ट के लिए दो से तीन दिन तक इंतजार की परेशानी से क्षेत्रवासियों को निजात मिलने जा रही है। महानगरों की तरह अब श्रीगंगानगर में भी 6 से 8 घंटे में कोरोना की जांच रिपोर्ट मिलने की सुविधा प्रारम्भ हो गई है। हनुमानगढ़ रोड पर टांटिया यूनिवर्सिटी कैम्पस में स्थित डॉ. एस. एस. टांटिया मेडिकल कॉलेज, हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल) की लैब को नेशनल एक्रीडेशन बोर्ड फॉर टेस्टिंग एंड केलिब्रेशन लेबोरेट्रीज (एनएबीएल) से मंजूरी मिलने के साथ ही इण्डियन कौंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च, नई दिल्ली (आइसीएमआर) ने भी कोरोना जांच के सेम्पल लेने के लिए अधिकृत कर दिया है। बीकानेर संभाग की प्रथम एवं एकमात्र इस निजी कोविड जांच लैब को कोरोना काल में अति महत्वपूर्ण साबित हुए 'आरोग्य सेतु' एप्प ने भी अपनी सूची में शामिल किया है, ताकि नजदीकी क्षेत्र के लोग भी इस लैब का लाभ उठा सकें। माइक्रोबॉयोलोजिस्ट डॉ. मलिका नितिशा मलिक की सेवाएं इसमें उपलब्ध है।

डॉ. विशु टांटिया ने बताया कि इलाके में अभी तक केवल सरकारी लैब में कोरोना जांच की सुविधा उपलब्ध होने के चलते लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ रहा था, वहीं सरकारी व्यवस्था पर अत्यधिक दबाव बना हुआ था। अब प्राइवेट लैब प्रारम्भ होने से आमजन को राहत मिलेगी, जिससे कोविड पोजिटिव होने का जल्द पता लगने से जल्द ही इलाज शुरू किया जा सकेगा। साथ ही, एयरपोर्ट, एकेडमिक एडमिशन तथा अन्य महत्वपूर्ण स्थानों पर प्रवेश से पूर्व कोरोना रिपोर्ट प्रस्तुत करने की औपचारिकता पूरी करने के लिए दो-तीन दिन तक इंतजार नहीं करना पड़ेगा। प्रारम्भिक तौर पर केवल लैब में आने वाले लोगों के सैम्पल लिए जाएंगे, जिन्हें सरकार की ओर से निर्धारित शुल्क 800 रुपए अदा करना होगा। शीघ्र ही घर से सैम्पल लेने की सुविधा भी शुरू की जाएगी।

जन सेवा औषधि केंद्र का एप्प तैयार, कीजिए इस्तेमाल और पाइए रियायत की बौछार

श्रीगंगानगर।

डॉ. एस.एस. टांटिया एमसीएच एंड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल) के जन सेवा औषधि केंद्र का एप्प तैयार है, इसके इस्तेमाल पर रियायत की बौछार होगी। जमाने के साथ चलने और नई तकनीक अपनाने में हॉस्पिट्ल सबसे आगे रहता है इसीलिए इस पर पूरे इलाके में सबसे अधिक विश्वास जताया जा रहा है। पफ्फल सोफ्टवेयर सोल्यूशन्स प्रा. लि. के चीफ टेक्नोलॉजी ऑफिसर (सीटीओ) अंकुर धवन ने इसे बहुपयोगी बनाने के लिए काफी मशक्कत की है। दुनिया में सूचना एवं प्रौद्योगिकी में नित नए प्रयोग हो रहे हैं, नवाचार किए जा रहे हैं। सरकारें भी हाइटेक हो रही है। देश में अधिकाधिक कैश लैस काम हो, इस दिशा में प्रयास बढ़ाए जा रहे हैं। कोरोना वायरस कोविड-19 से बने हालात के बाद तो नकद मुद्रा की आवाजाही कम से कम किए जाने की जरूरत काफी लोग मानने भी लगे हैं, डिजिटल लेन-देन की प्रक्रिया प्रशंसा पाने लगी है। जन सेवा हॉस्पिटल परिसर में जन सेवा औषधि केंद्र संचालित हो रहा है। इसके माध्यम से मरीजों एवं परिजनों की सुविधाओं को देखते हुए आवश्यक दवाएं आदि चिकित्सकीय सामग्री बाजार से अपेक्षाकृत कम दामों में पहले से ही उपलब्ध करवाई जा रही है। अब कोशिश की गई है डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा देने की। इसके सोच को साकार करने के लिए एप्प तैयार किया गया है। हॉस्पिटल प्रबंधन की मंशा है कि जन सेवा औषधि केंद्र पर दवाओं आदि का भुगतान एप्प के माध्यम से डिजिटल करने पर 15 प्रतिशत तक भुगतान दिया जाए। इसके लिए स्लेब सिस्टम भी रखने पर विचार किया जा रहा है। होम डिलीवर में भी इसे लागू किया जा सकता है। हॉस्पिट प्रबंधन ने अपेक्षा जताई है कि मरीज एवं परिजन इस एप्प को डाउनलोड जरूर करें तथा नई तकनीक का पूरा लाभ उठाएं।

जन सेवा हॉस्पिटल नई तकनीक में भी सबसे आगे, जताया जा रहा सबसे अधिक विश्वास

लाभ ही लाभ

एप्प के लाभ ही लाभ हैं। इससे यह भी देख सकते हैं कि आज तक कितनी बचत हुई है, इसके माध्यम से फेस बुक, इंस्टाग्राम और वाट्स एप के अलावा हॉस्पिटल की वेबसाइट से भी जुड़ा जा सकता है। भविष्य में इसे होम डिलीवरी में भुगतान में लागू किया जा सकता है। हॉस्पिटल के समस्त कार्यों में भी इस तरह के नवाचार पर विचार किया जा रहा है।

यूं करें डाउन लोड

जन सेवा औषधि केंद्र का एप्प गूगल प्ले स्टोर के माध्यम से एंड्रोइड मोबाइल फोन पर डाउन लोड किया जा सकता है और लाभ उठाया जा सकता है। इसे क्यू आर कोड को स्केन कर तथा लिंक के माध्यम से भी डाउन लोड किया जा सकता है।

- उपभोक्ताओं को लाभ देना मुख्य मकसद।
- डिजिटल को दिया जाएगा बढ़ावा।
- कैश लैस की तरफ आगे बढ़ना।
- समय और ऊर्जा की होगी बचत।
- व्यवस्थित एवं पारदर्शी कार्य को प्रोत्साहन।

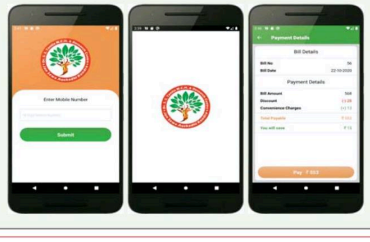

कोविड से पूर्ण रिकवरी जरूरी, जन सेवा हॉस्पिटल में विशेषज्ञ और सुविधाएं पूरी

श्रीगंगानगर।

कोविड से पूर्ण रिकवरी जरूरी है। कोरोना पॉजिटिव से नेगेटिव आना ही पर्याप्त नहीं है। मरीजों को आगे भी पूरी सजगता बरतनी चाहिए, इसी तरह उनके परिजनों को भी कोविड से पूर्ण रिकवरी को लेकर जागरुकता का परिचय देना चाहिए। इस बारे में की जाने वाली लापरवाही परेशानी का सबब बन सकती है।हनुमानगढ़ रोड पर टांटिया यूनिवर्सिटी परिसर स्थित डॉ. एस.एस. टांटिया एमसीएच एंड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल) में कोविड से पूर्ण रिकवरी के संबंध में विशेषज्ञ चिकित्सकों की सेवा उपलब्ध है।

क्या है पोस्ट कोविड सिंड्रोम

पोस्ट कोविड सिंड्रोम में कोरोना वायरस से संक्रमित मरीज नेगेटिव होने के बाद भी कुछ दिनों या महीनों तक उससे जुड़े हुए लक्षणों या दुष्प्रभावों का अनुभव करता है। इनसे जीवन की गुणवत्ता प्रभावित हो सकती है। कोविड के दुष्प्रभाव गंभीर मामलों तक ही सीमित नहीं रहते, जिन रोगियों को माइल्ड या मोडरेट इंफेक्शन हुआ है, उनमें भी नेगेटिव होने के बाद भी कोई न कोई परेशानी की आशंका रहती है।

ये लक्षण रह सकते हैं

कोविड से नेगेटिव होने के बाद भी कुछ लक्षण लम्बे समय तक बने रह सकते हैं, इनमें मुख्य रूप से ये हैं-अत्यधिक कमजोरी व थकान, श्वांस लेने में मुश्किल, चलने-फिरने में कठिनाई, मांसपेशियों में सुन्नपन या कमजोरी, याद्दाश्त में कमी, नींद में कमी, दिल की असामान्य धड़कन, मूड में बदलाव, डिप्रेशन, त्वचा पर चकते या दाग, सूंघन और स्वाद की क्षमता में बदलाव, भूख में कमी, पाचन संबंधी समस्या, वजन तेजी से कम होना, लगातार दस्त।

इन दुष्प्रभावों की आशंका

कोरोना वायरस कोविड-19 की चपेट में आने के बाद कई तरह के दुष्प्रभावों की आशंका देखी गई है। नसों व मांसपेशियों में कमजोरी, कम सुनाई देना, दिखने में धुंधलापन, किडनी या लीवर में खराबी, शरीर में आंतरिक सूजन, फेफड़ों की क्षमता व क्रियाशीलता में कमी, रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी, ब्रेन स्ट्रोक व हार्ट अटैक का खतरा बढ़ना, जिनके मधुमेह नहीं था, उनमें भी असामान्य रूप से हाई शुगर लेवल, हृदय की कार्यक्षमता कम होना इन दुष्प्रभावों में प्रमुख रूप से शामिल है।

पोस्ट कोविड रिकवरी प्रोग्राम जरूरी

कोविड से नेगेटिव होने के बाद भी कई तरह के लक्षण लम्बे समय तक नजर आने तथा अनेक दुष्प्रभावों की आशंका को देखते हुए पोस्ट कोविड रिकवरी प्रोग्राम बहुत जरूरी है। विशेषज्ञ चिकित्सकों के परामशज से पूर्ण रूप से जांच होनी चाहिए कि आंतरिक अंगों पर कोई दुष्प्रभाव तो नहीं पड़ा है। आवश्यकता के हिसाब से दवाओं, गुणवत्ता के आहार व पोषण, फिजियोथैरेपी आदि से वापिस बिलकुल स्वस्थ होने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ना सुनिश्चित होना चाहिए।

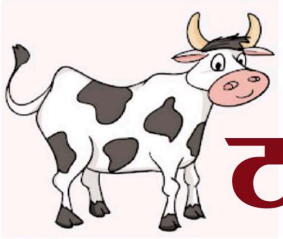

पशुपालकों के लिए अनूठी सौगात साबित हो रहा टांटिया वेटरनरी क्लिनिक

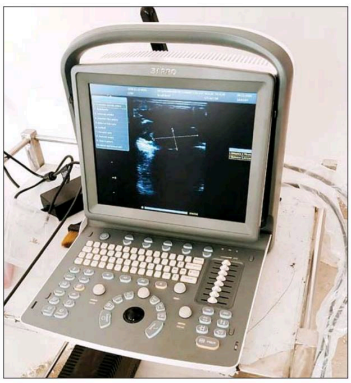

● सिर्फ 10 रुपए में देखा जाता है

श्रीगंगानगर।

टांटिया यूनिवर्सिटी परिसर स्थित टांटिया वेटरनरी क्लिनिक से इलाके के पशुपालकों को जैसे सौगात मिली है। सिर्फ 10 रुपए में पशु-पक्षियों को देखा जाता है, विशेषज्ञ चिकित्सक तथा अत्याधुनिक विश्वस्तरीय उपकरण इसमें उपलब्ध है। हाल ही में अल्ट्रासोनोग्राफी मशीन भी इसमें लगाई गई है। टांटिया समूह गुणवत्ता की शिक्षा और उत्कृष्ट चिकित्सा सेवा उपलब्ध करवा रहा है, पशुओं के लिए भी ऐसी उच्च श्रेणी की चिकित्सा सुविधा की जरूरत को महसूस करते हुए वेटरनरी क्लिनिक प्रारम्भ की। इसमें पशुओं की खून जांच, लीवर, किडनी संबंधी रोगों की जांच के अलावा एक्सरे, अल्ट्रासाउंड आदि की सुविधा उपलब्ध है। बीमार पशुओं को एडमिट कर इलाज किया जाता है साथ ही पशुपालकों के ठहरने की व्यवस्था भी की गई है।

● अल्ट्रासोनोग्राफी मशीन भी उपलब्ध

टांटिया वेटरनरी क्लिनिक के अधिष्ठाता डॉ. आर.के.चन्दोलिया, समन्वयक दलजीत सिंह, डॉ. अमनदीप सिंह बोदला आदि पूरी टीम जुटी रहती है, इसी का परिणाम है आज पूरे इलाके में इसकी साख है। श्रीगंगानगर-हनुमानगढ़ जिले के ही नहीं पड़ोसी राज्यों के पशुपालक भी इसका लाभ उठा रहे हैं।

जरूरत के हिसाब से विस्तार जारी

टांटिया वेटरनरी क्लिनिक में जरूरत के हिसाब से सुविधाओं में विस्तार जारी है। सीबीसी एनालाइजर, बायोकेमेस्ट्री एनालाइजर आदि प्रारम्भ होने से पशुओं की जांच एवं उपचार में गुणवत्ता बढ़ गई है। क्लिनिक में चूहे से लेकर ऊंट तक, गौवंश, भैंस, कुत्ते, बिल्ली आदि सभी तरह के पशुओं का उपचार उपलब्ध है। यूनिवर्सिटी के गेट नम्बर 4 स्थित वेटरनरी क्लिनिक से लाभान्वित होने वालों की संख्या दिनों दिन बढ़ती जा रही है।

सकारात्मकता की सीख और अंधेरे में उजाले का उल्लास

टी-क्लिक

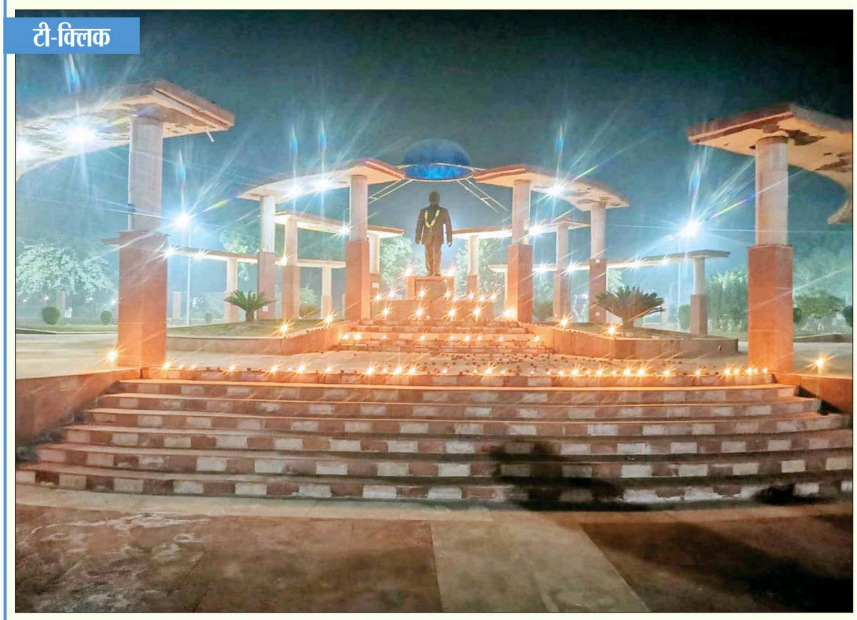

टांटिया यूनिवर्सिटी परिसर सकारात्मकता और नई ऊर्जा से जुटे रहने का सदा संदेश देता है। कोरोना की काली छाया के बावजूद पर्वाधिराज दिवाली पर भी यही अंदाज रहा। डॉ. एस.एस. टांटिया एमसीएच एंड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल) में कोरोना मरीजों की समर्पित भाव से सेवा जारी है। परिसर में दिवाली के उपलक्ष्य में की गई इस शानदार रोशनी को कैद किया है अतुल सुथार ने।

टी-क्लिक: टांटिया समूह के साथी समूह के किसी भी संस्थान, सेवाओं, सुविधाओं अथवा इंफ्रास्ट्रक्चर को दर्शाती या अन्य कोई संदेश देती तस्वीर 'टी-क्लिक' के लिए प्रेषित कर सकते हैं। फोटोग्राफी में रुझान हो तो उठाइए कैमरा और यादगार पल को कैद कर अपने नाम व विवरण के साथ media@tantiauniversity.com पर मेल कर दीजिए।

एड्स संबंधी सजगता और समय पर उपचार जांच आवश्यक

विश्व एड्स दिवस 1 दिसम्बर को डॉ. पी.आर. भादू दे रहे हैं सराहनीय सेवाएं

श्रीगंगानगर।

एड्स संबंधी सजगता और समय पर उपचार, जांच आवश्यक है। लापरवाही से नुकसान होता है। डॉ. एस.एस. टांटिया एमसीएच एंड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल) में सीनियर मेडिकल ऑफिसर डॉ. पी.आर. भादू एड्स संबंधी परामर्श एवं उपचार में सराहनीय सेवाएं दे रहे हैं। एच.आई.वी से संक्रमित लोगों में लम्बे समय तक एड्स के कोई लक्षण दिखाई नहीं देते। लंबे समय तक (3, 6 महीने या अधिक) एच.आई.वी का भी औषधिक परीक्षण से पता नहीं लग पाता। अधिकतर एड्स के मरीजों को सर्दी, जुकाम या विषाणु बुखार हो जाता है पर इससे एड्स होने का पता नहीं लगाया जा सकता। एचआईवी वायरस का संक्रमण होने के बाद उसका शरीर में धीरे-धीरे फैलना शुरु होता है। जब वायरस का संक्रमण शरीर में अधिक हो जाता है, उस समय बीमारी के लक्षण दिखाई देते हैं। एड्स के लक्षण दिखने में आठ से दस साल का समय भी लग सकता है। ऐसे व्यक्ति को, जिसके शरीर में एच.आई.वी वायरस हो पर एड्स के लक्षण प्रकट न हुए हों, एचआईवी पॉजिटिव कहा जाता है।

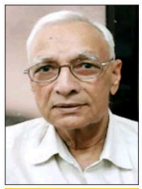

डॉ. पी. आर. भादू

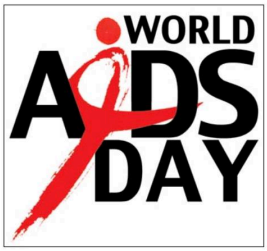

कुछ प्रारम्भिक लक्षण

वजन का काफी हद तक काम हो जाना, लगातार खांसी बने रहना, बार-बार जुकाम का होना, बुखार, सिर दर्द, थकान, शरीर पर निशान बनना (फंगल इन्फेक्शन के कारण), हैजा, भोजन से अरुचि, लसीकाओं में सूजन। ये लक्षण अन्य सामान्य रोगों के भी हो सकते हैं। एड्स की निश्चित रूप से पहचान केवल और केवल, चिकित्सीय परीक्षण से ही की जा सकती है व की जानी चाहिए।

फैली हुई है भ्रांतियां

पीड़ित के साथ खाने-पीने से, बर्तनों की साझीदारी से, हाथ मिलाने या गले मिलने से, एक ही टॉयलेट का प्रयोग करने से, मच्छर या अन्य कीड़ों के काटने से, पशुओं के काटने से, खांसी या छींकों से जैसे कई तरह की भ्रांतिया फैली हुई है। विशेषज्ञों के अनुसार सिर्फ इनसे एड्स का संक्रमण नहीं होता।

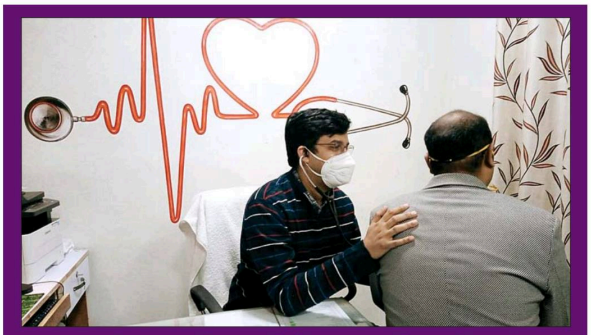

अत्याधुनिक सुविधाओं के साथ बेहतरीन सेवाएं दे रहा टांटिया हॉस्पिटल का हृदय रोग विभाग

डॉ. प्रेम मित्तल, डॉ. आशीष एम. अग्रवाल, डॉ. दिव्या ए. अग्रवाल की विशेषज्ञता का मिल रहा भारी लाभ

श्रीगंगानगर।

टांटिया जनरल एंड मल्टीस्पैशलिटी हॉस्पिटल में दिल का ख्याल दिल से रखा जाता है। डॉ. प्रेम मित्तल, डॉ. आशीष एम. अग्रवाल एवं डॉ. दिव्या ए. अग्रवाल की विशेषज्ञता का भारी लाभ सभी को मिल रहा है। हॉस्पिटल के हृदय रोग एवं सर्जरी विभाग से श्रीगंगानगर-हनुमानगढ़ जिले के ही नहीं पंजाब-हरियाणा सहित अनेक राज्यों, यहां तक कि महानगरों के मरीज भी लाभान्वित हो रहे हैं। एंजियोग्राफी, एंजियोप्लास्टी, पेस मेकर, डिवाइस क्लोजर, कैथ लैब सहित अनेक सुविधाओं के चलते टांटिया हॉस्पिटल की विशिष्ट पहचान है। सीसीयू, एडल्ट इकोकार्डियोग्राफी, बच्चों की इकोकार्डियोग्राफी, एंजियोग्राफी (फीमोरल एंड रेडियल), बैलून से हृदय वाल्व को खोलने, पांव एवं गुर्दे के नसों की एंजियोप्लास्टी, कम्प्यूटराइज्ड ईसीजी, सीटी पलमोनरी, डिजिटल एक्स-रे, हाईटेक लेबोरेट्री, जन्मजात हृदय रोगों का उपचार, टीएमटी आदि की सुविधा विश्वस्तरीय अत्याधुनिक उपकरणों से सुसज्जित उपकरण टांटिया हॉस्पिटल में उपलब्ध है। विशेषज्ञों की बदौलत मरीजों एवं उनके परिजनों की अपेक्षाएं पूरी हो रही हैं। अनुभवी एवं प्रशिक्षित स्टाफ हर समय मनोयोग से सेवा को तत्पर रहता है।

डॉ. प्रेम मित्तल

डॉ. आशीष एम अग्रवाल

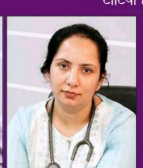

डॉ. दिव्या ए अग्रवाल

जांच में गुणवत्ता, समय भी कम

टांटिया हॉस्पिटल में एमआरआई 1.5 टेस्ला 16 चैनल की मशीन में अन्य साधारण मशीन की तुलना में आधे समय में जांच हो जाती है, जांच की गुणवत्ता भी साधारण मशीन के मुकाबले 5 गुणा ज्यादा होती है। पेट की एमआरआई एवं छाती-पैर की नसों को देखना संभव है, दिमाग व रीढ़ की हड्डी की बारीक नसों की भी गहनता से जांच होती है।

खर्चा साधारण एमआरआई के बराबर ही लगता है। टांटिया जनरल एंड मल्टीस्पेशलिटी हॉस्पिटल में सिर से पांव तक की एंजियोग्राफी भी उपलब्ध है। सीटी स्केन 16 स्लाइस का होने से पेट के कैंसर की पकड़ भी आसानी से होती है, अधरंग, लकवे जैसी समस्या में भी बहुत कारगर है।

टांटिया समूह आ रहा है इलाके के खूब काम, इसीलिए कमा रहा है नाम

गणमान्य जनों ने की सराहना, कहा- चिकित्सा सेवा एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी फहराया है परचम

श्रीगंगानगर।

टांटिया समूह इलाके के खूब काम आ रहा है, इसीलिए नाम कमा रहा है। क्षेत्र के प्रमुख गणमान्य जनों ने समूह के सामाजिक सरोकारों एवं उपलब्ध करवाई जा रही सेवाओं की सराहना करते हुए प्रोत्साहित किया है। इन्होंने कहा है कि चिकित्सा सेवा एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र में भी टांटिया समूह ने विशिष्ट पहचान बनाई है तथा सफलता का परचम फहराया है। श्रीगंगानगर को चिकित्सा सेवा एवं उच्च शिक्षा का हब बनाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है। विभिन्न संस्थाओं में सक्रिय, अपनी खास पहचान रखने वाले इन विशिष्ट जनों का कहना है कि भारत-पाकिस्तान अंतरराष्ट्रीय सीमा के महाराजा गंगासिंह जी के सपनों के शहर श्रीगंगानगर की पहचान गंगानगरी किन्नू, गंगानगरी ग्वार आदि के कारण है, अब देश-दुनिया में लोग टांटिया समूह की वजह से भी श्रीगंगानगर को पहचानने लगे हैं।

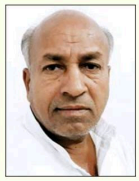

टांटिया समूह के सामाजिक सरोकार के काम प्रशंसनीय है। कोरोना काल में जागरुकता का अभियान चलाना, अनेक जगह पेयजल की स्थाई व्यवस्था करवाना, शिव सर्किल को गोद लेकर उसे संभालना आदि तारीफ के काबिल है। सक्षम एवं समर्थ जनों को समाज हित में सदैव कुछ अच्छा करते रहना चाहिए

- हनुमान गोयल अध्यक्ष, श्रीगंगानगर-हनुमानगढ़ जिला व्यापार संघ

अपने लिए तो सभी करते हैं, समाज के लिए भी यथा संभव नेक काम करने चाहिए। टांटिया समूह वास्तव में अच्छे काम कर रहा है। फल-सब्जी एवं अनाज मंडी में कोरोना जागरुकता का अभियान चलाना, मास्क, इम्यूनिटी बूस्टर बांटना बहुत अच्छी बात है। सामाजिक कामों में सदा ऐसी सक्रियता की कामना है

- हेमराज गुरहानी पूर्व सहायक सचिव, कृषि उपज मंडी समिति (फल-सब्जी)

टांटिया किसान सेवा केंद्र किसानों को उपयोगी जानकारी निःशुल्क दे रहा है। किसानों को जागरुक करने के लिए इ-नाम की उपयोगी कार्यशाला भी रखी गई है। कोरोना महामारी के समय नई धान मंडी में जागरुकता की मुहिम भी प्रशंसनीय है। टांटिया समूह को इसी तरह मानव सेवा में जुटे रहना चाहिए

- सुरेंद्र पारीक पूर्व प्रदेश सचिव, सरपंच यूनियन

टांटिया समूह उच्च शिक्षा के क्षेत्र में पहचान बना चुका है। चिकित्सा सेवा में भी बड़ा नाम है। समूह की तरफ से समय-समय पर समाज के हित के काम किए जाते हैं, यह प्रशंसा की बात है। कोरोना वायरस वैश्विक महामारी के समय जागरुकता अभियान, नुक्कड़ नाटक आदि वास्तव में सराहनीय कार्य हैं

- गौरव काकड़िया अध्यक्ष, एसडी बिहाणी स्नातकोत्तर महाविद्यालय

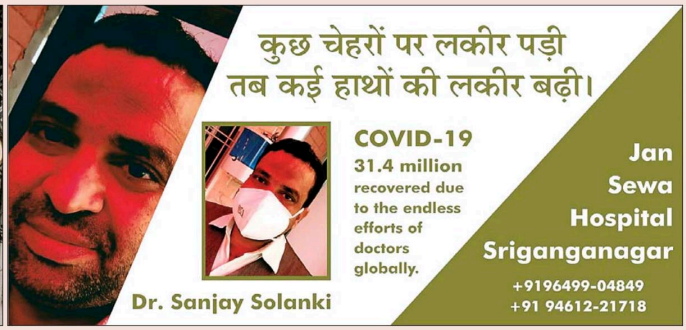

यूं आए जिंदगी में कि खुशी मिल गई मुश्किल राहों में चलने की वजह मिल गई...

जन सेवा हॉस्पिटल के कोरोना रिकवरी वार्ड में हो रही है सुखद आश्चर्य पाने वालों के भावों की अमृत वर्षा

मुश्किल है तो क्या गम, जन्म दिन की खुशी मनाने में प्रबंधन, चिकित्सक और स्टाफ नहीं परिजनों से कम

श्रीगंगानगर।

यूं आए जिंदगी में कि खुशी मिल गई, मुश्किल राहों में चलने की वजह मिल गई...हर इक लम्हा खुशनुमा बना दिया, मेरी उम्मीदों को नई मंजिल मिल गई। कुछ ऐसे भावों की अमृत वर्षा इन दिनों डॉ. एस.एस. टांटिया एमसीएच एंड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल) के कोरोना रिकवरी वार्ड में हो रही है। प्रबंधन, चिकित्सक और स्टाफ रोगियों को किसी प्रकार की कमी महसूस नहीं होने दे रहा। पूरी लगन एवं समर्पित भाव से न केवल उनकी सेवा की जा रही है, किसी रोगी का जन्मदिन होने पर बड़े हर्षोल्लास से मनाया भी जा रहा है।

हॉस्पिटल के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी बलजीत सिंह, वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. संजय सोलंकी एवं पूरा स्टाफ कोरोना रोगियों तथा कोरोना से रिकवर होने वाले मरीजों को चिकित्सा सेवा एवं अपेक्षित सुविधाएं उपलब्ध करवाने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं। सभी दिन-रात जुटे रहते हैं, तभी तो हॉस्पिटल में भर्ती होने वाले स्वस्थ होकर खुशी-खुशी अपने घर लौट रहे हैं।

गुलदस्ते, केक और तालियों के साथ हैप्पी बर्थ डे की गूंज

कोरोना रिकवरी वार्ड में इन दिनों भर्ती जिन मरीजों के जन्म दिन का शुभ मौका आया है, मिलकर इसे मनाया गया है। ऐसे दृश्य देखकर सभी सुखद आश्चर्य कर रहे हैं। रोगी और उनके परिजनों-परिचितों के बीच आई इस अस्थाई दूरी को जन सेवा हॉस्पिटल के प्रबंधन की आत्मीयता के भाव ने निकटता में बदल दिया है। मरीज खुद के जन्मदिन की यूं खुशियां देखकर भावुक हुए बिना नहीं रहते। एक महिला मरीज ने तो अपना 70 वां जन्म दिन मनाते हुए कहा कि वो प्रबंधन सहित पूरे स्टाफ की सेवा भावना को सेल्यूट करती हैं, उन्होंने यह भी बताया कि जब सातवीं में थीं तब मुम्बई में एक समारोह में वहां के राज्यपाल को सेल्यूट करने का अवसर मिला था।

रखा जाता है पूरा ध्यान, तभी तो मन में पाया मान

टांटिया यूनिवर्सिटी परिसर स्थित डॉ. एस.एस. टांटिया एमसीएच एंड रिसर्च सेंटर (जन सेवा हॉस्पिटल) अपेक्षाएं पूरी कर रहा है, इसलिए सभी के मन में मान पाया है। कोविड डेडिकेटेड सुविधाओं में चौबीस घंटे हेल्प हेस्क कार्यरत है। सरकार की एडवाइजरी एवं प्रोटोकॉल की पूरी तरह पालना करते हुए मरीजों तथा परिजनों की संतुष्टि को सर्वोपरि रखा जा रहा है। विशेषज्ञ चिकित्सक, अनुभवी एवं प्रशिक्षित नर्सिंग ऑफिसर्स विश्वस्तरीय अत्याधुनिक सुविधाओं तथा उपकरणों के साथ मनोयोग से जुटे हुए है।

घबराने की नहीं जागरुकता की जरूरत

वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. संजय सोलंकी का कहना है कि कोरोना पॉजिटिव आने पर मरीज की पूरी केयर की जानी चाहिए। किसी प्रकार से घबराने की आवश्यकता

नहीं, बस जागरुकता जरूरी है। सिटी स्केन एवं जो भी जांच बताई जाए, करवाने में किसी प्रकार की ढिलाई नहीं होनी चाहिए। मरीज के अलावा परिजनों को भी मास्क पहन कर रखना चाहिए। मरीज का मनोबल कम नहीं होने देना चाहिए, उनमें यह आत्मविश्वास बढ़ाया जाए कि थोड़े समय में बिलकुल स्वस्थ हो जाएंगे। गुणवत्ता का आहार देना चाहिए, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने के लिए इसका ध्यान रखना आवश्यक है। कोरोना को लेकर मरीजों एवं उनके परिजनों तथा परिचितों की चिंता अपनी जगह सही है, इसके बावजूद सभी को इलाज करने वाले चिकित्सक, नर्सिंग ऑफिसर्स, चिकित्सा संस्थान आदि का भरपूर सहयोग करना चाहिए। सभी मिलजुल कर एक-दूसरे का सहयोग करेंगे तभी इस वैश्विक महामारी से आए संकट को टाल पाएंगे।

दिवाली पर दीपक जलाए, बांटी मिठाई

जन सेवा हॉस्पिटल में कोरोना से रिकवर हुए मरीजों के साथ दिवाली भी मनाई गई। मुख्य प्रशासनिक अधिकारी बलजीत सिंह, वरिष्ठ क्षय रोग विशेषज्ञ डॉ. संजय सोलंकी ने सभी के सुस्वास्थ्य की कामना की और मिठाई बांटी। इस मौके पर नर्सिंग इंचार्ज वेदप्रकाश चौधरी, नर्सिंग स्टाफ कोरोना वारियर्स आदि मौजूद थे। त्यौहार के उपलक्ष्य में दीपक भी जलाए गए। मरीजों ने हॉस्पिटल की इस पहल की मुक्त कंठ से प्रशंसा की।

यूजीसी के मापदण्डों पर पूरा गौर, इसीलिए विश्वनीयता और गुणवत्ता का डंका चहुं ओर

टीयू से पीएचडी का सपना, कड़ी मेहनत से ही होता अपना

प्रो. (डॉ.) एम.एम. सक्सेना

डॉ. प्रवीण शर्मा

श्रीगंगानगर।

टांटिया यूनिवर्सिटी (टीयू) से पीएचडी करने का सपना, आसानी से अपना नहीं होता। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के मापदण्डों को पूरा किया जाता है, कड़े मापदण्डों पर खरा उतरने के बाद ही शोधार्थी आगे बढ़ पाता है। यही वजह है कि उच्च शिक्षा के क्षेत्र में टीयू के शोध विभाग का विश्वसनीयता और गुणवत्ता के मामले में डंका बज रहा है। यूनिवर्सिटी के अध्यक्ष प्रो. (डॉ.) एम.एम. सक्सेना के कुशल मार्गदर्शन में निदेशक (शोध) डॉ. प्रवीण शर्मा एवं उनकी टीम पूरी सजगता बरतती है और शोध कार्यों को लेकर तय किए गए निर्देशों की पालना सुनिश्चित करती है। रिसर्च एडवाइजरी कमेटी (आरएएसी) साहित्यिक चोरी आदि की पूरी जांच करती है। सहायक निदेशक डॉ. रितुबाला, इन्द्रजीत सिंह आदि गुणवत्ता आदि को लेकर पूरी नजर रखते हैं। शोधार्थी का न्यूनतम एक रिसर्च पेपर प्रकाशित होना जरूरी होता है, इसके अलावा कम से कम दो सेमिनार में प्रस्तुति भी आवश्यक की हुई है।

यह है पूरी प्रक्रिया

पीएचडी के लिए पात्रता रखने वालों की प्रवेश परीक्षा होती है, बाद में साक्षात्कार होता है। इसमें पास होने पर छह माह का कोर्स वर्क दिया जाता है, कोर्स वर्क की परीक्षा के बाद गाइड आवंटित किया जाता है। गाइड के मार्गदर्शन में दो माह के अंदर-अंदर स्रोपसिस जमा करवानी होती है। रिसर्च एडवाइजरी कमेटी (आरएएसी) इस पर अग्रिम कार्रवाई के लिए मंथन करती है। कमेटी की स्वीकृति के बाद शोध शुरू होता है और प्रत्येक छह माह के अंदर-अंदर प्रगति रिपोर्ट आरएसी में जमा करवानी पड़ती है। तीन साल के पीएचडी प्रोग्राम के अंतर्गत थीसिस जमा होने से 6 माह पहले समरी देनी होती है। थीसिस जमा करवाने से पहले संबंधित विभाग में शोधार्थी को प्रस्तुति देनी होती है। थीसिस जमा होने के बाद ओपन वायवा होता है और सफलता के बाद पीएचडी की डिग्री मंजूर की जाती है।

पीएचडी प्रोग्राम में शामिल विषय

होम्योपैथी, आयुर्वेद, फिजियोथैरेपी, नर्सिंग, एज्युकेशन, फिजिकल एज्युकेशन, लॉ, केमिस्ट्री, कम्प्यूटर साइंस, मैथमेटिक्स, कॉमर्स एंड मैनेजमेंट, इकोनोमिक्स, इंग्लिश, जोग्रॉफी, हिन्दी, होम साइंस, पंजाबी, राजनीति विज्ञान, साइकोलॉजी, लोक प्रशासन, समाज शास्त्र, इतिहास, ड्राइंग एंड पेंटिंग, संस्कृत।

गौरवशाली क्षण बना यादगार

टीयू के दीक्षांत समारोह में पीएचडी की डिग्री प्रदान की। इस गरिमामय समारोह में डिग्री प्राप्त करने वालों के लिए गौरवशाली क्षण यादगार बन गया। कमेटी बोर्ड ऑफ एडवांस स्टडी एंड रिसर्च पीएचडी संबंधी समस्त कार्यों पर नजर रखती है और गुणवत्ता तथा साख बना रहना सुनिश्चित करती है। इसकी वर्ष में दो बार बैठक होती है।

पुण्य स्मृति
श्रद्धेय डॉ. श्यामसुन्दर टांटिया

मार्गदर्शक
डॉ. विशु टांटिया

मुख्य सम्पादक
डॉ. विकास सचदेवा (मो. : 9461221718)

कार्यकारी सम्पादक
राजकुमार जैन (मो. : 8005519250)

पुण्य स्मृति
श्रद्धेय श्रीमती शकुन्तला देवी टांटिया

टांटिया समूह द्वारा जनहित में निःशुल्क प्रसारित-प्रचारित। सर्वाधिकार सुरक्षित। बिना अनुमति, दुर्भावनावश, किसी भी अंश को काट-छांटकर या सौजन्य उल्लेख के बिना उपयोग में लाए जाने पर दण्डनीय कार्रवाई अमल में लाई जाएगी। - मुख्य सम्पादक
मुख्य कार्यालय : टी मीडिया, द्वितीय तल, जन सेवा हॉस्पिटल, टांटिया विश्वविद्यालय परिसर, हनुमानगढ़ मार्ग, श्रीगंगानगर-335002